Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 1818–1823

THE VIBRANT FORM OF BIHAR'S FOLK ART: PAPIER-MÂCHÉ

बिहार की लोक कला पेपरमैशी का जीवंत स्वरूप

Rajeev Ranjan [1], Sanjay Kumar [2]

[1] Research Scholar, Department of Plastic Arts, Faculty of Visual Arts, Banaras Hindu University, Varanasi, (Uttar Pradesh) India
[2] Research Scholar, Department of Plastic Arts, Faculty of Visual Arts, Banaras Hindu University, Varanasi, (Uttar Pradesh) India

ABSTRACT

English: Bihar's folk art includes Mithila (Madhubani) painting, Manjusha art, Tikuli art, Sikki art, Sujni embroidery, and terracotta craft, along with Papier-mâché, which is also a significant folk art form. This craft involves blending paper pulp, Multani mitti (Fuller's earth), fenugreek powder, and other materials to create various toys, sculptures, and decorative objects. It remains a traditional and eco-friendly art form, preserving the natural essence of recycled or used paper pulp. Papier-mâché is used not only by folk artists but also by contemporary artists as a medium of artistic expression. This research paper highlights the unique techniques, designs, and social and cultural contexts of Bihar's Papier-mâché art. Additionally, it addresses the role of the Bihar government in preserving the cultural identity of this art form and providing economic support to local artists. For this study, interviews were conducted with senior artists who provide training at the Upendra Maharathi Shilp Anusandhan Kendra, Patna—an institution dedicated to the preservation and training of Bihar's folk arts—as well as young artists who have received training there. This research paper also includes a comparative analysis of the creative processes of Papier-mâché art from Bihar, Odisha, and Kashmir.

Hindi: बिहार की लोक कला मिथिला (मधुबनी) पेंटिंग, मंजूषा कला, टिकुली कला, सिक्की कला, सुजनी कढ़ाई और टेराकोटा शिल्प के साथ-साथ पेपरमैशी शिल्प भी एक महत्वपूर्ण लोक कला है। इसमे कागज की लुगदी (पेपर पल्प), मुल्तानी मिट्टी एवं मेथी का चूर्ण इत्यादि को मिलाकर कई प्रकार के खिलौने, मूर्तियाँ और सजावटी वस्तुएँ तैयार की जाती है। यह कला पारम्परिक रूप से आज भी प्रचलन में है, जो पर्यावरण के अनुकूल है। यह कला पुराने या प्रयोग किए गए कागजों के लुगदी के सहज स्वभाव को अपने आप में समेटे हुए है। पेपरमैशी का प्रयोग लोक कलाकारों के साथ-साथ समकालीन कलाकार भी अपनी भावभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कर रहे हैं। यह शोध-पत्र बिहार की पेपरमैशी कला के अनूठे तकनीक, रूपांकन और सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर करता है। यह अध्ययन पेपरमैशी कला की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने और स्थानीय कलाकारों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए बिहार सरकार की भूमिका को भी संबोधित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र के लिए विशेष जानकारी प्राप्त करने हेतु बिहार की लोक कला के संरक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए समर्पित उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान केंद्र, पटना में प्रशिक्षण देने वाले वरिष्ठ कलाकारों एवं वहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवा कलाकारों का साक्षात्कार किया गया है। इस शोध पत्र में बिहार के पेपरमैशी कला के विश्लेषण के साथ-साथ ओडिशा और कश्मीर के पेपरमैशी कला की रचनात्मक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

Keywords: Papier-mâché, Folk Art, Bihar, Paper Pulp, Cultural Heritage, पेपरमैशी, लोक कला, बिहार, कागज की लुगदी (पेपर पल्प), सांस्कृतिक धरोहर

Corresponding Author
Rajeev Ranjan,
rajeevranjan.pt@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.4572

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

भारत के उत्तर-पूर्व भाग के मध्य में स्थित बिहार राज्य की समृद्ध और वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर उनकी पारम्परिक और लोक कला में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यहाँ की मिथिला पेंटिंग विश्वविख्यात है। यह चित्र शैली स्वयं में अपने लोक वैभव को समेटे हुए है। मंजूषा कला, काष्ठ कला, टेराकोटा कला, धातुशिल्प, टिकुली कला, सिक्की कला, कशीदाकारी एवं सुजनी के साथ-साथ पेपरमैशी भी एक महत्वपूर्ण लोक कला है।

फ्रेंच शब्द 'पेपियर-मेशे' का अर्थ 'कागज की लुगदी' है, जिससे बिहार में कई घरेलू एवं आकर्षक वस्तुएँ बनाई जाती हैं। इसमें सर्वप्रथम पुराने एवं रद्दी कागज को पानी में भिगो कर रखा जाता है। उसके मुलायम हो जाने पर उसे कूट कर उसकी लुगदी तैयार की जाती है। फिर उसमें मेथी के दाने, गोंद या मुल्तानी मिट्टी मिलाकर उसे आटे की तरह गुथा जाता है। तत्पश्चात् उसे मनचाहा रूप या आकार देकर धूप में सुखाने के बाद उस पर आकर्षक रंग चढ़ाया जाता है। पेपरमैशी से बनने वाली ज्यादातर वस्तुएं रोजमर्रा के काम से जुड़ी होती हैं। जैसे- टोकरी, अनाज रखने की कोठी, श्रृंगार पेटी, प्लेट, मूर्तियाँ, खिलौने इत्यादि। बिहार में मधुबनी और दरभंगा इसके प्रमुख केन्द्र हैं।

ऐतिहासिक और पारम्परिक उपयोग:

कागज की खोज चीन में हान राजवंश (202 ई.पू.- 220 ई.) में हुई थी। इस प्रकार चीनी लोग ही पेपरमैशी के आविष्कारक भी बने। उन्होंने इसका उपयोग हेलमेट बनाने के लिए किया। हेलमेट बनाने के दौरान वे कागज की लुगदी को लाह की कई परतों से सख्त किया करते थे।(Singh & Gupta, 2020) बाद में यह जाना गया कि यह कलारूप जापान में भी मौजूद है। फारस में इसका उपयोग 'पेपरमैशी' मुखौटा बनाने और उत्सव की सजावट के लिए किया जाता था। फिर यह कलारूप स्पेन, फ्रांस, जर्मनी की यात्रा करते हुए भारत पहुँचता है।

भारत के विभिन्न राज्यों में इसके कई प्रमुख केंद्र हैं। बिहार, झारखंड में पटना, हजारीबाग, मुरहू, सरायकेला, मधुबनी और दरभंगा शहर पेपरमैशी के काम की अपनी पारम्परिक शैलियों के लिए प्रसिद्ध हैं।(Craft Revival Trust, n.d.) दिल्ली में मिट्टी के साथ रद्दी कागज को मिलाकर सजावटी तथा जीवन शैली से जुड़ी वस्तुएँ जैसे पेन स्टैंड, लिफाफा होल्डर, पेपरवेट, ज्वैलरी बॉक्स आदि बनाए जाते हैं। गुजरात अपने पेपरमैशी और प्लास्टर ऑफ पेरिस से बने उत्पादों के लिए जाना जाता है। हिन्दू देवी-देवताओं, वनस्पतियों और जीवों की रंग-बिरंगी चित्रित और अलंकृत मूर्तियाँ, खिलौने और अन्य उत्पाद यहाँ बनाए जाते हैं। इस प्रकार पेपरमैशी कला के विभिन्न रूप भारत के अलग-अलग राज्यों में अपनी एक विशेष शैली में आज भी प्रचलित है। ओडिशा अपने पेपरमैशी शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। कारीगर विभिन्न प्रकार के सूखे बेकार कागज और कपड़े एकत्र करते हैं और उनसे कई तरह के उत्पाद बनाते हैं। कश्मीर में पेपरमैशी का उपयोग छोटे चित्रित बक्से, और ट्रे बनाने के लिए किया जाता है। इन उत्पादों की साफ-सुथरी और सुंदर परिसज्जा (फिनिशिंग) के कारण इनका एक स्थापित बाजार है।

चित्रः 1 बिहार के पेपरमैशी शिल्प

चित्रः 2 छऊ नृत्य के लिए मुखौट

चित्रः 3 कश्मीर के पेपरमैशी शिल्प

तकनीक और प्रयुक्त सामग्री:

पेपरमैशी से कलाकृतियों को बनाने के लिए मिश्रित सामग्री की आवश्यकता होती है। मुख्य घटक निश्चित रूप से कागज की लुगदी है, जिसे मजबूती देने के लिए कभी-कभी कपड़ा भी मिलाया जाता है। बांधने के लिए, गोंद या स्टार्च जैसे चिपकने वाले पदार्थों का प्रयोग किया जाता है। परम्परागत रूप से इस कलारूप को बनाने की प्रक्रिया में चिपकने वाला पदार्थ-पानी, आटे या स्टार्च को भारी क्रीम के घनत्व प्राप्त होने तक मिलाया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर इसमें पॉलीविनाइल एसीटेट (PVA) आधारित गोंद जैसे अन्य चिपकने वाले पदार्थों का उपयोग भी किया जाता है।

आवश्यकतानुसार अखबार को एक बाल्टी पानी में कम से कम 24 घंटे से 1 सप्ताह तक भिगोया जाता है। इसके बाद भिगोए हुए कागज की लुगदी को हाथों से टुकड़ों में फाड़कर, अच्छी तरह से ओखली में कुटकर पेपरमैशी को तैयार किया जाता है। इसे प्लास्टिक शीट पर रखा जाता है और कागज की लुगदी को बांधने के लिए इसमें मुल्तानी मिट्टी और कृत्रिम गोंद (सिंथेटिक एधेसिव) मिलाया जाता है। इसके अलावा मेथी के बीज का चूर्ण कागज की लुगदी में मिलाया जाता है। यह चूर्ण कीटनाशक के रूप में मिलाया जाता है।

चित्रः 4 अखबार

चित्रः 5 मुल्तानी मिट्टी

चित्रः 6 मेथी का चूर्ण

इन चरणों से गुजरने के बाद मिश्रण कार्य करने हेतु उपयुक्त हो जाता है। कारीगर मिश्रण से एक टुकड़ा लेकर उसे आकार देना शुरू करता है। आकार बनाते समय अतिरिक्त पानी की जरूरत नहीं होती है। आकार बनने के बाद उसे 2-4 दिन धूप में सूखाया जाता है। गर्मी के मौसम में यह जल्दी सूख जाता है, बीच-बीच में यह जाँच करते रहते है कि आकार मुड़ न जाए, अगर मुड़ जाए तो उसे ठीक कर दिया जाता है। इसके सूख जाने पर पल्प की एक परत लगाई जाती है, जिसे प्रति किलो ग्राम भिगोए हुए कागज में 1 किलो ग्राम मुल्तानी मिट्टी मिलाकर बनाया जाता है। ऐसा एक समान सतह बनाने के लिए किया जाता है। इसके बाद इसे 1-2 दिन तक सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। चिकनी सतह तैयार करने के लिए सतह पर 100 नंबर सैंड पेपर का इस्तेमाल किया जाता है। फिर स्पंज की सहायता से मोटी मुल्तानी मिट्टी की लेप (परत) लगाई जाती है। जीरो नंबर ब्रश से 'कचनी' (काले रंग से लाइन) बनाई जाती है, फिर इसमें अलग-अलग रंग भरे जाते हैं। इस प्रक्रिया में प्राकृतिक रूप से बने रंगों का इस्तेमाल नहीं किया जाता है, क्योंकि 'पेपरमैशी' बहुत ज्यादा रंग सोखता है, जिसके फलस्वरुप रंग की गहराई और चमक हल्की हो जाती है, इसलिए इसमे मुख्यतः कृत्रिम रंगों का प्रयोग किया जाता है।

चित्रः 7 पेन स्टैंड

चित्रः 8 जाता चलाती हुई गृहिणी

बिहार के पेपरमैशी की सादगी, कच्चापन और लोक-आकर्षण बेजोड़ है। लोकप्रिय मधुबनी कला से पेपरमैशी कलाकृति की सतह का अलंकरण करने से कलाकृति की सुंदरता बढ़ जाती है। जीवंत चित्रकला शैली और इस शिल्प की आकर्षक बनावट इसे अद्वितीय और मनोरम बनाती है। इसके अंतिम चरण में मधुबनी चित्रों से सजावट शामिल है। शिल्पकार वस्तु को जीवंत और आकर्षक बनाने के लिए बीच-बीच में गहरे काले रंग की रूपरेखा 'कचनी' और चमकीले रंगों का उपयोग करते हैं। सबसे अधिकांश रूपांकन प्रकृति और मिथक या पौराणिक कथाओं से लिए जाते हैं, जैसे कि पेड़, फूल, पक्षी, देवी-देवता आदि।

अधिकांश रूपांकन बिहार के मिथिला क्षेत्र की मजबूत परम्पराओं और समृद्ध संस्कृति को दर्शाते हैं। परम्परागत रूप से, पेपरमैशी का उपयोग पौराणिक कथाओं और शादी समारोहों से संबंधित वस्तुओं को बनाने के लिए किया जाता था जैसे कि कोहबर, गौरी पूजा, बालक श्रवण कुमार, सीता का जन्म आदि। इस तकनीक का विस्तार कार्यालय स्टेशनरी, पेन स्टैंड, होल्डर और लैंप आदि जैसी उपयोगी वस्तुओं को बनाने के लिए किया गया है। आधुनिक कला के रूप में पेपरमेशी से कई प्रकार के रंगीन, आकर्षक एवं ज्यादा कलात्मक वस्तुएँ बनाई जा रही है। जिनका उपयोग न केवल जिलें, राज्य, राष्ट्रीय अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा रहा है।(Chouhan, 2022)

बिहार की पेपरमैशी कला में प्रयोग किये जाने वाले मिश्रण के सूत्र:

4 किलो ग्राम अखबार + 1 किलो ग्राम मुल्तानी मिट्टी + 50 ग्राम कृत्रिम गोंद (सिंथेटिक एधेसिव) + 250 ग्राम मेथी पाउडर

बिहार की पेपरमैशी कलाकार: सुभद्रा देवी

बिहार में जन्मी प्रसिद्ध मिथिला कलाकार सुभद्रा देवी अपनी उत्कृष्ट पेपरमैशी के लिए जानी जाती हैं। इसके अलावा, वह मिथिला कला विकास समिति की एक समर्पित सदस्य हैं। 2023 में सुभद्रा देवी को कला जगत में उनके असाधारण योगदान के लिए भारत सरकार ने प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। उनका जन्म 1941 ई. में बिहार के मधुबनी जिले में हुआ था। वह मधुबनी जिले के सलेमपुर गाँव में पली-बढ़ी, उन्होंने दूसरों को देखकर पेपरमैशी कला बनाना सीखा, जब वह छोटी थी तभी से पेपरमैशी में हाथ आजमाया और वह अभी भी इस कला के विकास के लिए हर संभव तरीके पर विचार कर रही हैं। वह इसे बड़े स्थानों तक पहुँचाने के लिए अथक प्रयास करती हैं। सुभद्रा देवी, जो अपनी सादगी और मासूमियत के लिए जानी जाती हैं, पेपरमैशी कला में उनके असाधारण कौशल के लिए कई उच्च सम्मान प्राप्त हुए। 1980 और 1991 में, इन्हें इस जटिल शिल्प में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने पेपरमैशी का उपयोग ट्रे, कटोरे और प्लेट जैसी रोजमर्रा की सामान्य वस्तुएँ बनाने के लिए भी किया है। अपने समृद्ध रंगों और विस्तृत अलंकरणों के साथ उनकी बनाई पेपरमैशी की कलाकृतियों ने कला प्रेमियों के दिलों पर गहरी छाप छोड़ी है। कला के सुंदर कार्यों के प्रति आकर्षित होने के अलावा, लोग उनके लिए उच्च राशि का भुगतान करने के लिए भी तैयार होते हैं। जब सुभद्रा देवी की तरह पेपरमैशी कला के क्षेत्र में किसी कलाकार को कोई पुरस्कार मिलता है, तो यह एक ऐसा क्षण होता है जो व्यक्तिगत उपलब्धि से

परे होता है। यह एक प्रकाश केन्द्र की तरह काम करता है, जो कला के साथ-साथ कलाकार और उसकी संपूर्ण पृष्ठभूमि को भी रोशन करता है। यह सम्मान कला की अंतर्निहित सुंदरता और जटिलता को उजागर करने के लिए उत्प्रेरक का काम करता है तथा स्थानीय और वैश्विक स्तर पर इसके निरंतर विकास और प्रशंसा के लिए एक मंच प्रदान करता है। सुभद्रा देवी को दिए गए सम्मान न केवल उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा को दर्शाते हैं, बल्कि पेपरमैशी कला के संरक्षण और उन्नति में उनके योगदान को भी दर्शाते हैं। उन्हें मिले यह सम्मान कला के इस रूप को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में मदद करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे प्रेरित होंगी।

चित्रः 9 पेपरमैशी कलाकार सुभद्रा देवी पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त करते हुए

बिहार की लोक कला का संरक्षण एवं प्रशिक्षण:

उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान केंद्र, पटना, बिहार में कला और कौशल के प्रशिक्षण के लिए एक सुस्थापित संस्थान है। इस संस्थान की स्थापना श्री उपेंद्र महारथी ने बिहार की विभिन्न कलाओं और शिल्पों में प्रशिक्षण प्रदान कराने के उद्देश्य से सन् 1958 ई. में किया था। अब यह बिहार सरकार के उद्योग विभाग के अधीन है। उद्योग विभाग मधुबनी पेंटिंग, सिक्की कला, पेपरमैशी, टिकुली कला और मिट्टी के बर्तन बनाने की कक्षाएं आयोजित करने में संस्थान की मदद करती है। छात्र सीखने और बेहतर नौकरी के अवसर पाने के लिए किसी भी विषय में 6 महीने की अवधि के कोर्स में दाखिला लेते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अलावा, संस्थान में एक संग्रहालय भी है, जिसमें बिहार के विभिन्न हिस्सों से संबंध रखने वाली कलाकृतियाँ संग्रहित की गई हैं।

चित्रः 10 उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान केंद्र, पटना, बिहार

हस्तशिल्प के विकास के लिए वर्तमान में राज्य के विभिन्न स्थलों पर शिल्पकारों के लिए सामान्य सुविधा केन्द्र का निमार्ण कराया गया है। उन केन्द्रों में संबंधित शिल्पकारों को प्रशिक्षण और बाजार की मांग के अनुरूप नये-नये अभिकल्पों (डिजाइन) का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिल्प और जातीय पेशे के रिश्ते को नये सिरे से जगाया जा रहा है ताकि नयी पीढ़ी अपने परम्परागत शिल्प से फिर से जुड़ सके। राज्य सरकार ऐसे लोगों के सामने हस्तशिल्प की विराट आर्थिक संभावनाओं को उजागर कर रही है। ऑनलाइन बिक्री को बढ़ावा दिया जा रहा है, साथ ही पटना एवं दिल्ली में स्थित बिक्री केन्द्रों के माध्यम से हस्तशिल्पों की बिक्री की जा रही है। बिहार के हस्तशिल्प के प्रति उपभोक्ता समाज का रुझान भी जग चुका है। फलस्वरूप बिहार में हस्तशिल्प के कारोबार में वृद्धि हुई है और उसका तेजी से विकास हो रहा है।

तुलनात्मक अध्ययन:

कश्मीर की पेपरमैशी कला, जिसे 'कर-ए-कलमदान' के नाम से जाना जाता है, 15वीं शताब्दी ई॰ में सुल्तान जैन-उल-अबिदीन के द्वारा शुरू की गई थी।(Sahu, 2024) इस कला में कागज को गोंद के साथ मिलाकर विभिन्न सजावटी वस्तुएँ बनाई जाती हैं। अभिकल्प (डिजाइन) में फूलों के आलेख (मोटिफ), पक्षी और ज्यामितीय पैटर्न शामिल होते हैं, जो अत्यधिक विस्तार और जीवंत रंगों के साथ बनाए जाते हैं।

ओडिशा में पेपरमैशी से बने मुखौटे और मूर्तियाँ पटचित्र परम्परा से प्रेरित हैं। मुखौटे, मिट्टी और अखबार के साँचे का उपयोग करके बनाए जाते हैं। कागज और कपड़े के टुकड़ों को भिगोया जाता है और स्थानीय रूप से बने गोंद के साथ साँचे पर परतों में लगाया जाता है। गोंद के साथ मिश्रित चूरे को लगाने के बाद सुखाया जाता है और बालू कागज (सैंडपेपर) से घिसकर परिमार्जित (पॉलिश) किया जाता है। पटचित्र चित्रकला की तरह इस कला में भी रंग समुद्री सीपियों और चट्टानों से बनाए जाते हैं। आकृति के आँखों की लाल और काली रूपरेखा जैसी बारीकियाँ पटचित्र शैली का अनुसरण करती हैं। स्थानीय लोक और शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शनों में उपयोग के लिए देवताओं, राक्षसों और जानवरों के मुखौटे बनाए जाते हैं। आकृतियाँ और अन्य उत्पाद जैसे गुड़िया, पेन स्टैंड और लैंपशेड आदि कई आकारों में बनाए जाते हैं।

परम्परागत रूप से, बिहार के पेपरमैशी शिल्प का उपयोग बिहार में प्रसिद्ध छऊ नृत्य के लिए मुखौटे तैयार करने के साथ-साथ गुड़िया बनाने में भी किया जाता है। हालाँकि, समय के साथ यह कला और विकसित हुई हैं। आज पेपरमैशी का उपयोग विभिन्न उपयोगी वस्तुओं के निर्माण के लिए भी किया जाता है। पेपरमैशी की आकृतियाँ इतनी मनमोहक होती हैं कि आप इनमें लोक शिल्पकारों की रचनात्मक सरलता को महसूस कर सकते हैं।

कश्मीर की पेपरमैशी में शाही और मुगल प्रभाव भी देखे जा सकते हैं, (Maliyar, 2021) जबकि ओडिशा की कला लोक परम्पराओं में निहित है। बिहार की कला अधिक स्थानीयकृत रूप से प्रलिखित है। कश्मीर के पेपरमैशी शिल्प के अभिकल्प (डिजाइन) अत्यधिक जटिल और विस्तृत होते हैं, जबकि ओडिशा के मुखौटे प्रखर और रंगीन होते हैं। बिहार की वस्तुएँ सरल और अधिक देशी होती हैं। कश्मीर में पेपरमैशी वस्तुएँ ऐतिहासिक रूप से शाही दरबारों और घरों में उपयोग की जाती थीं। ओडिशा में वे सांस्कृतिक त्योहारों और लोक नाटकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बिहार में वे अधिकतर दैनिक सजावटी उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती हैं।

चित्र: 11 ओडिशा के पेपरमैशी शिल्प

चित्र: 12 कश्मीर के पेपरमैशी शिल्प

चित्र: 13 बिहार के पेपरमैशी शिल्प

2. निष्कर्ष

प्रत्येक क्षेत्र की पेपरमैशी कला उसकी अनूठी सांस्कृतिक धरोहर और कलात्मक परम्पराओं को दर्शाती है। बिहार की पेपरमैशी कला की एक अद्वितीय और समृद्ध परम्परा है, जो राज्य की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कला न केवल अपनी सुंदरता और सृजनात्मकता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसके माध्यम से कलाकारों की मेहनत और सांस्कृतिक जड़ों से उनके जुड़ाव भी स्पष्ट होते हैं। बिहार के विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर मधुबनी और पटना में इस कला का विकास हुआ है और इसे स्थानीय कलाकारों ने पीढ़ी दर पीढ़ी संजोया है। यह कला न केवल स्थानीय बाजारों में बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुकी है। पेपरमैशी कला के माध्यम से बिहार के कलाकारों ने अपनी संस्कृति और परम्पराओं को जीवित रखा है, इसे नई पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्लास्टिक के उद्भव ने पेपरमैशी के वाणिज्यिक और सजावटी महत्व को कम कर दिया है। समकालीन अभिकल्पक (डिजाइनर) आजकल पेपरमैशी कला में अधिक रुचि दिखा रहे हैं, क्योंकि यह एक पर्यावरण-अनुकूल तकनीक है तथा इसके कच्चे माल सस्ते और आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। हल्की लेकिन ठोस प्रवृत्ति के कारण इसकी माँग राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है। आगे चलकर, इस कला को अधिक प्रोत्साहन और संरक्षण की आवश्यकता है ताकि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत बनी रहे। बिहार सरकार इस कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए आवश्यक प्रयास कर रही है, जिससे कलाकारों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण मिल रहा है। इस प्रकार, पेपरमैशी कला न केवल बिहार की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध कर रहा है बल्कि राज्य के आर्थिक विकास में भी योगदान दे रहा है।

उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान केंद्र, पटना, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और प्रदर्शनियों का आयोजन करता है, ताकि कारीगरों और जनता को पेपरमैशी कला के महत्व और तकनीकों के बारे में शिक्षित किया जा सके। यह संस्थान कारीगरों को अपने काम को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच भी प्रदान करती है, जिससे इस शिल्प को जारी रखने और नवाचार के लिए प्रोत्साहन मिलता है। इसके अतिरिक्त, यह संस्थान स्थानीय और राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर इन कला रूपों को यह सुनिश्चित करते हुए बढ़ावा देता है कि वे बिहार की सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा बने रहें।

कश्मीर और ओडिशा की पेपरमैशी कला में 'लैकर' के प्रयोग और चटकीले रंग से अलंकरण के कारण कागज की लुगदी का स्वाभाविक गुण गौण हो जाता है। लेकिन बिहार की पेपरमैशी कला पेपर के वास्तविक स्वभाव को अपने आप में प्रदर्शित करती है। इसका आकार और स्वरूप देसीपन लिए हुए है, साथ ही अलंकरण के लिए मधुबनी चित्र और मंजूषा चित्र का प्रतिरूपण देखने को मिलता है जिसमें हम पाते हैं कि एक लोक कला अपने साथ दूसरे लोक कला को संजोए रखी है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Singh, A., & Gupta, A. (2020). Furniture design out of waste paper. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 7(12), 411-415. https://www.jetir.org/papers/JETIR2012254.pdf

Craft Revival Trust. (n.d.). Papier mache of Bihar. Asia InCH: Encyclopedia of Intangible Cultural Heritage. https://asiainch.org/craft/papier-mache-of-bihar/

Chouhan, M. (2022). Changing nature of traditional Kutti art of Western Rajasthan. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 3(1), 134-148. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v3.i1.2022.99

Sahu, S. (2024, March 6). Handicrafts map of Bihar. LinkedIn. https://www.linkedin.com/pulse/handicrafts-map-bihar-meraki-retail-and-tech-pvt-ltd-m5fbc/

Maliyar, B. A. (2021). A history of papier-mâché craft in Kashmir. International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research, 4(6). https://doi.org/10.31426/ijamsr.2021.4.6.4414